Lecture Series no:- 35

06. 05. 2020

For Sociology
B.A. (Hon's) PART-II
Paper - III
Unit - IV (Religion and Secularism)

Dr. Sandhya Kumari
Guest Assistant Professor
Department of Sociology
A.N.D College, Shahpur
Patory, Samastipur

Topic — RELIGION (धर्म)

Sol— धर्म मानव समाज का ऐसा व्यापक, स्थायी एवं शाश्वत तत्व है जिसको सम्यक् रूप से समझे बिना हम समाज के रूप को समझने में असफल रहेंगे। वर्तमान में मानव ने विज्ञान के सहारे अपने पर्यावरण पर काफी नियंत्रण प्राप्त कर लिया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि कई समाज या तो धर्म-निरपेक्ष हो गये हैं या धर्म में रुचि नहीं रखते और धार्मिक विश्वासों की वैधता को स्वीकार नहीं करते। फिर भी धर्म समाज आज भी एक सार्वभौमिक तथ्य बना हुआ है। धर्म मानव को अलौकिक शक्ति से सम्बन्ध जोड़ता है। इसका सम्बन्ध मानव की भावनाओं, श्रद्धा एवं भक्ति से है। धर्म मानव के आन्तरिक जीवन को ही प्रभावित नहीं करता, वरन् उसके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन को ही प्रभावित नहीं करता है। मार्क्स धर्म को मानव के लिए 'अफीम' मानते हैं। मैक्स वेबर का मत है कि धर्म हमारे आर्थिक जीवन को प्रभावित करता है। यूरोप में जब प्रोटेस्टेन्ट धर्म का उदय हुआ तो पूँजीवाद ने जन्म लिया। क्योंकि धार्मिक आचार ही आर्थिक क्रियाओं को निर्धारित करते हैं, अतः जब धर्म में परिवर्तन होता है तो आर्थिक क्रियाओं में भी परिवर्तन आती है। इस प्रकार धर्म मानव जीवन का एक प्रमुख अंग है। हम यहाँ धर्म के विभिन्न पक्षों पर विचार करेंगे।

धर्म का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning And Definition of Religion) — स्टीफेन फ्यूक्स (Stephen Fuchs) के मतानुसार, Religion शब्द Religare से बना है जिसका अर्थ है 'बाँधना' अर्थात मनुष्य को ईश्वर से सम्बन्धित करना। धर्म शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा के 'धृ' शब्द से मानी जाती है जिसका अर्थ है 'धारण' करना अर्थात सभी जीवों के प्रति मन में दया धारण करने को ही धर्म कहा गया है।

Ajanta Officer

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

हिन्दू धर्म ग्रंथों में तामस एवं राजस गुणों के स्थान पर सात्विक गुणों के धारण करने को ही धर्म माना गया है। धर्म के अर्थ को स्पष्ट करने हेतु विभिन्न विद्वानों ने परिभाषाएं दी है:

एडवर्ड टायलर (Edward Tylor) के अनुसार, "धर्म आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास है।"

सर जेम्स फ्रेजर (Sir James Frazer) कहते हैं, "धर्म से — मैं मनुष्य से श्रेष्ठ उन शक्तियों की संतुष्टि या आराधना समझता हूं जिनके सम्बंध में यह विश्वास किया जाता है कि वो प्रकृति और मानव जीवन को मार्ग दिखाती और नियंत्रित करती हैं।"

मैलिनोवस्की ने धर्म में समाजशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक दोनों पहलुओं का समावेश करते हुए लिखा है, "धर्म क्रिया की एक विधि है और साथ ही विश्वासों की एक व्यवस्था भी, धर्म एक समाजशास्त्रीय घटना के साथ-साथ एक व्यक्तिगत अनुभव भी है।"

पी. हॉनिगशीम (P. Honigsheim) के अनुसार, "प्रत्येक उस मनोभाव को धर्म कहेंगे जो इस विश्वास पर आधारित है कि अलौकिक शक्तियों का अस्तित्व है तथा उनसे सम्बंध स्थापित करना न केवल महत्वपूर्ण है वरन सम्भव भी है।"

होबल (Hoebel) — "धर्म अलौकिक शक्ति में विश्वास पर आधारित है जिसमें आत्मावाद और मानावाद दोनों सम्मिलित हैं।"

क्यूबर (Cuber) का विचार, "धर्म सांस्कृतिक जीवन से सम्बंधित व्यवहार का वह प्रतिमान है जिसका निर्माण पवित्र विश्वासों, विश्वासों से सम्बंधित उद्वेगपूर्ण विचारों तथा इन्हें व्यक्त करने वाले बाहरी आचरणों आदि से होता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर संक्षेप में कहा जा सकता है कि धर्म किसी न किसी प्रकार की अतिमानवीय (Superhuman) या अलौकिक (Super-Natural) या समाजोपरि (Super-Social) शक्ति पर विश्वास है जिसका आधार भय, श्रद्धा, भक्ति और पवित्रता की धारणा है और जिसकी अभिव्यक्ति प्रार्थना, पूजा या आराधना आदि के रूप में की जाती है।

धर्म की विशेषताएं या मौलिक लक्षण (Basic Characteristics of Religion) — धर्म की उपर्युक्त परिभाषाओं से धर्म के कुछ मौलिक लक्षण अथवा विशेषताएं परिलक्षित होती हैं जो निम्न हैं:

1. अलौकिक शक्ति में विश्वास (Belief in Super-natural Power) — जॉनसन का कथन है कि, "एक अलौकिक शक्ति में विश्वास धर्म का सबसे प्रमुख तत्व है।"

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

विश्वास के बिना किसी भी प्रकार का धर्म का निर्माण या विकास नहीं हो सकता। धर्म के अन्तर्गत एक एक ऐसी शक्ति में विश्वास किया जाता है जो अलौकिक और दिव्य शक्ति की होती है ऐसी विश्वास पर धर्म टिका हुआ है, जो लोग इस पर विश्वास नहीं करते वे नास्तिक कहलाते हैं। वह शक्ति साकार भी हो सकती है और निराकार भी।

(2) पवित्रता की धारणा (Concept of Sacredness) — जिस धर्म के लोग मानते हैं, उनकी दृष्टि में उस धर्म से सम्बन्धित सब कुछ पवित्र होता है। दुर्खीम ने धर्म में पवित्रता पर बल देते हुए लिखा है कि धर्म पवित्र वस्तुओं से सम्बन्धित विश्वासों और आचरणों की वह समग्र व्यवस्था है जो इस पर विश्वास करने वालों को एक नैतिक समुदाय में संयुक्त करती है।"

(3) प्रार्थना, पूजा या आराधना (Prayer, Worship or Conciliation) — धर्म में लोग जिस शक्ति में विश्वास करते हैं उससे लाभ उठाने व उसके कोप से बचने हेतु प्रार्थना, पूजा तथा आराधना करते हैं। हर धर्म के देवालय व विधियाँ भिन्न भिन्न होती हैं।

(4) संवेगात्मक भावनाएँ (Emotional Feelings) — धर्म भावना प्रधान होता है, तर्क-प्रधान नहीं। अलौकिक शक्ति के प्रति संवेगात्मक भावनाएँ होती हैं जिनकी अभिव्यक्ति उस शक्ति के प्रति श्रद्धा, भय, प्रेम आदि के रूप में की जाती है।

(5) विशेष धार्मिक सामग्री और प्रतीक (Particular Religious object and Symbol) — धार्मिक क्रियाओं में अलग-अलग धर्म के लोग अलग-अलग धार्मिक सामग्रियाँ (Religious objects), धार्मिक प्रतीकों (Religious Symbols), जादू-टोना, पौराणिक कथाओं आदि का समावेश होता है, जैसे हिन्दू धर्म में हवन, पूजा-आरती, केले-पीपल आदि की पूजा व गंगा जल और तीर्थ स्थानों का विशेष महत्व है तो ईसाई धर्म में बाइबिल, क्रोस, मोमबत्ती आदि का। इसी प्रकार अन्य प्रतीकों या कुछ भौतिक वस्तुओं का समावेश भी धर्म के अन्तर्गत होता है।

(6) निषेध (Taboos) — प्रत्येक धर्म के लोगों के व्यवहारों के नकारात्मक पक्ष को प्रभावित करने की दृष्टि से कुछ निषेध पाये जाते हैं। निषेध का तात्पर्य यही है कि उन्हें कुछ कार्यों की मनाही की जाती है, उन्हें बताया जाता है कि क्या-क्या नहीं करना चाहिए, जैसे झूठ नहीं बोलना चाहिए, दुराचार, व्यभिचार, बेईमानी आदि को नहीं करनी चाहिए। कुछ निषेध सभी धर्मों में समान रूप से पाये जाते हैं जबकि कुछ विशेष समाजों से ही

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सम्बन्धित होते हैं। विवाह सम्बन्धी निषेध सभी समाज में अलग-अलग पाये जाते हैं।

(4) धार्मिक संस्तरण (Religious hierarchy) — सामान्यतः सभी धर्म से सम्बन्धित संस्तरण की एक व्यवस्था पायी जाती है। जिन लोगों को धार्मिक क्रियाएं अथवा कर्मकाण्ड कराने का समाज द्वारा विशेष अधिकार प्राप्त होता है, उन्हें अन्य लोगों की तुलना में संस्कारात्मक दृष्टि से उच्च एवं पवित्र समझा जाता है। ऐसे लोगों में पाण्डे, पुजारी, महन्त-सन्त, पादरी, मौलवी, ओझा, आदि आते हैं। संस्तरण की श्रेणी में दूसरा स्थान उन लोगों को प्राप्त होता है जो धर्म के अन्तर्गत बताये गए मार्ग पर चलते हैं। जो लोग धार्मिक आदेश की पालन नहीं करते, धर्म-विरुद्ध कार्य करते हैं अथवा अपवित्रता लाने वाली वस्तुओं के सम्पर्क में आते हैं, उन्हें समाज में निम्नतम स्थान प्राप्त होता है।

समाप्त

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner